ऊँट का फूल

कहानी: प्रभात
चित्र: लोकेश खोड़के

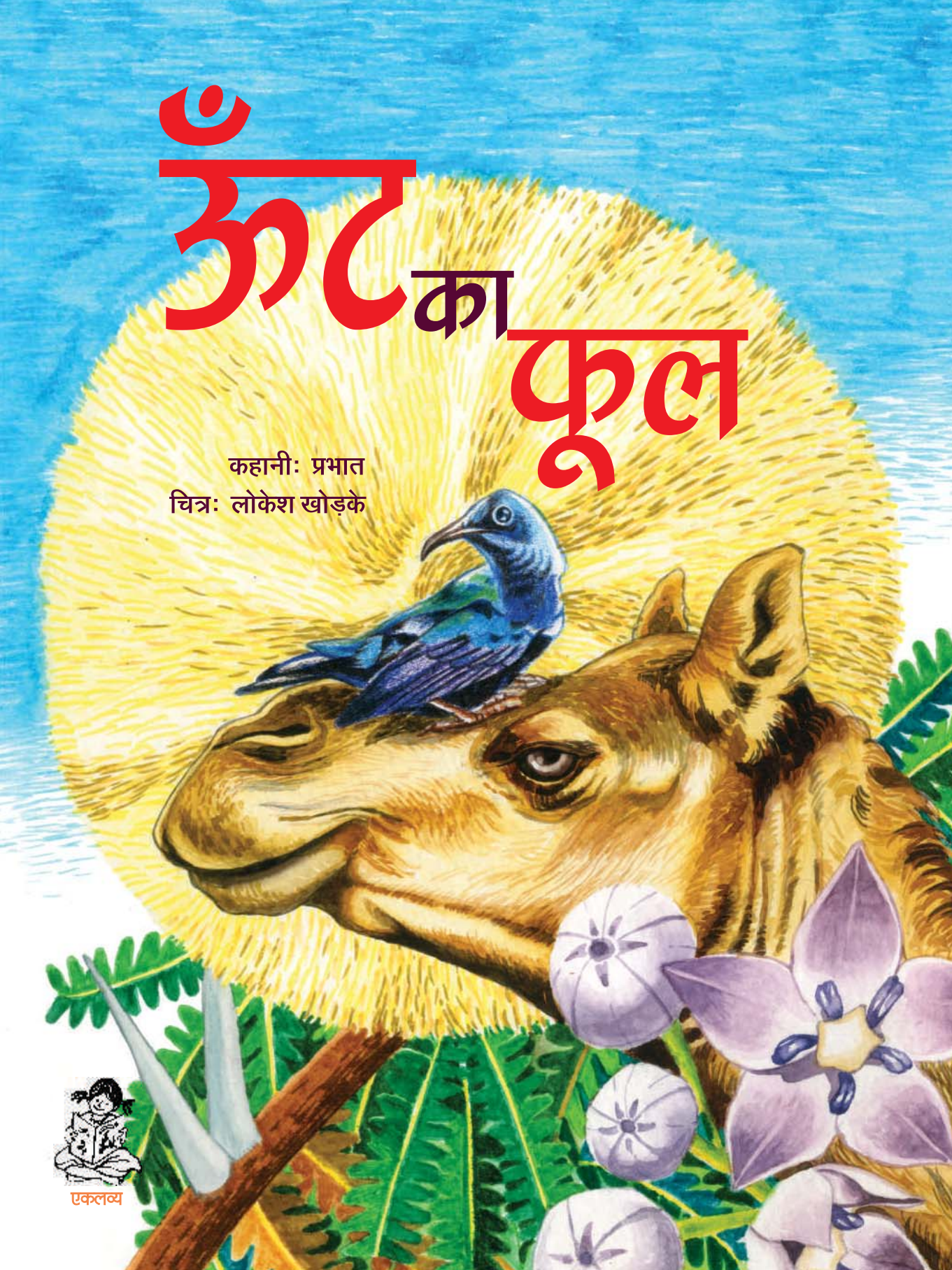

एकलव्य

ऊँट का फूल

कहानीः प्रभात

चित्रः लोकेश खोड़के

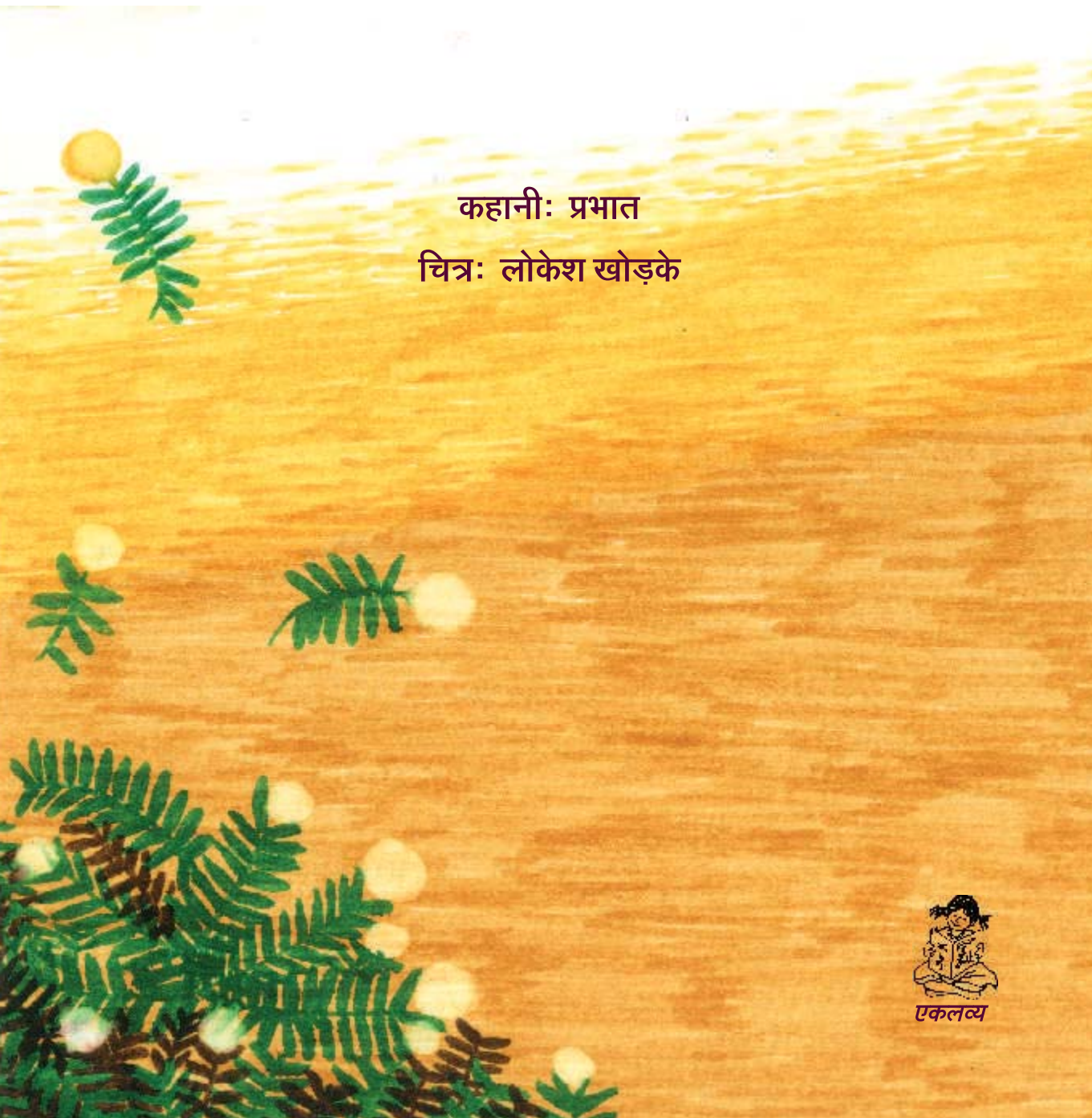

एकलव्य

फूलों के गाँव में
तरह-तरह के फूल थे।

आम के फूल
नीम के फूल
बबूल के फूल
आक के फूल
अड़ूसा के फूल
कटैड़ी के फूल

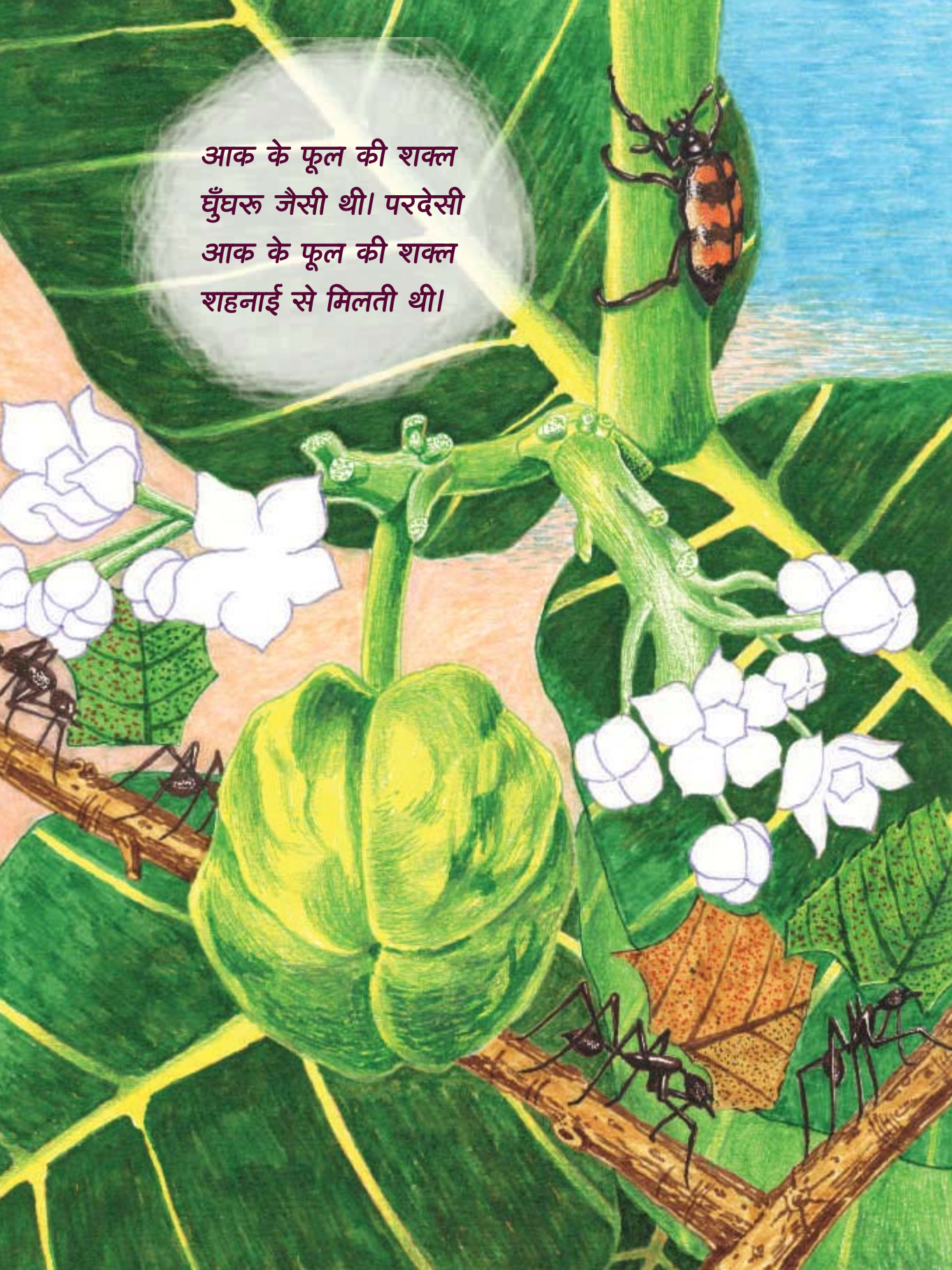
आक के फूल की शक्ल
घुँघरू जैसी थी। परदेसी
आक के फूल की शक्ल
शहनाई से मिलती थी।

हरेक फूल में कोई न कोई खूबी थी। कटैड़ी के फूलों को देखकर लगता था जैसे वे पीले पानी के बने हैं। बबूल के फूल का रंग देखकर सोने के रंग की याद आ जाती थी।

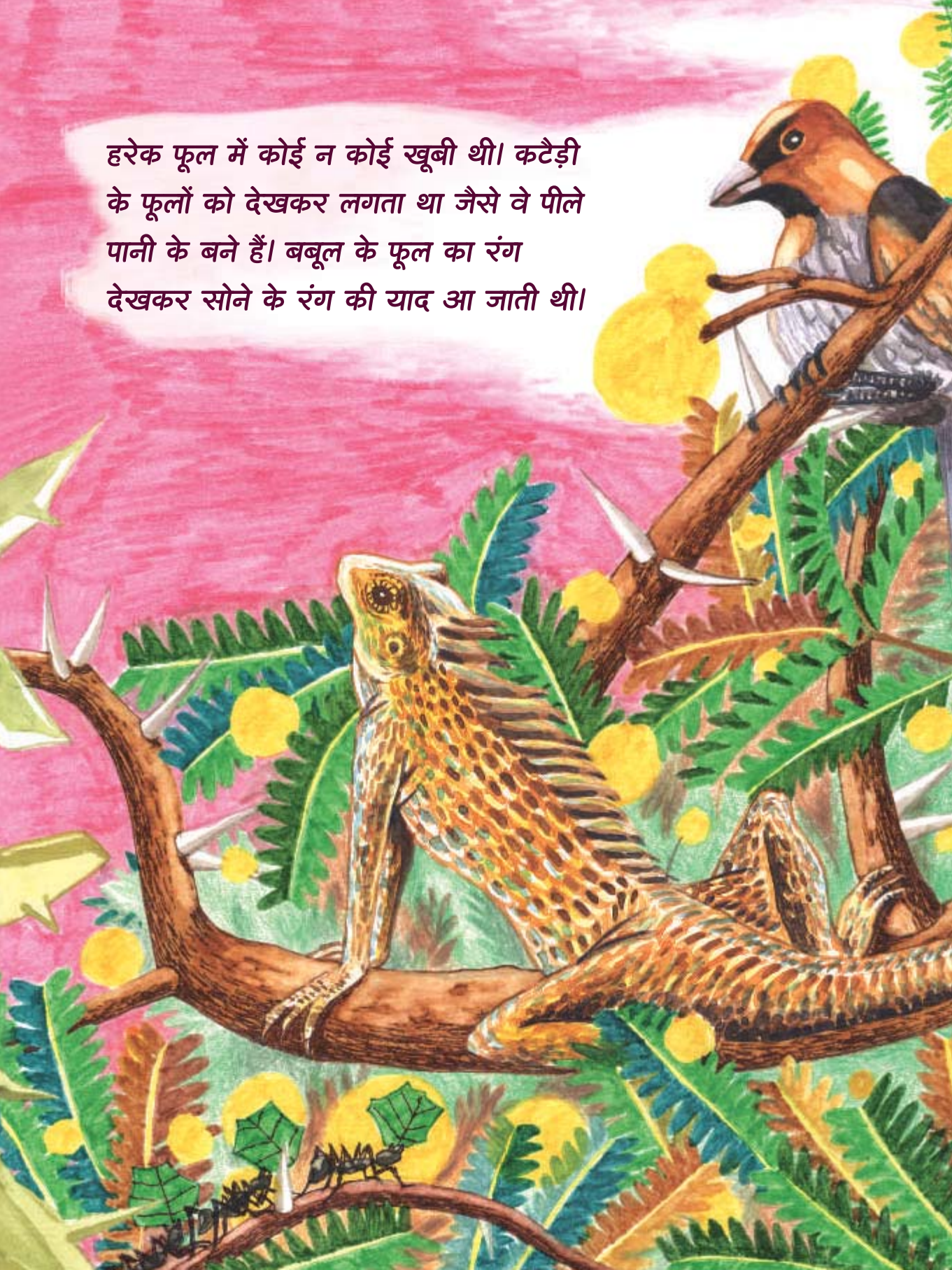

एक दिन फूलों के गाँव में एक ऊँट आया।

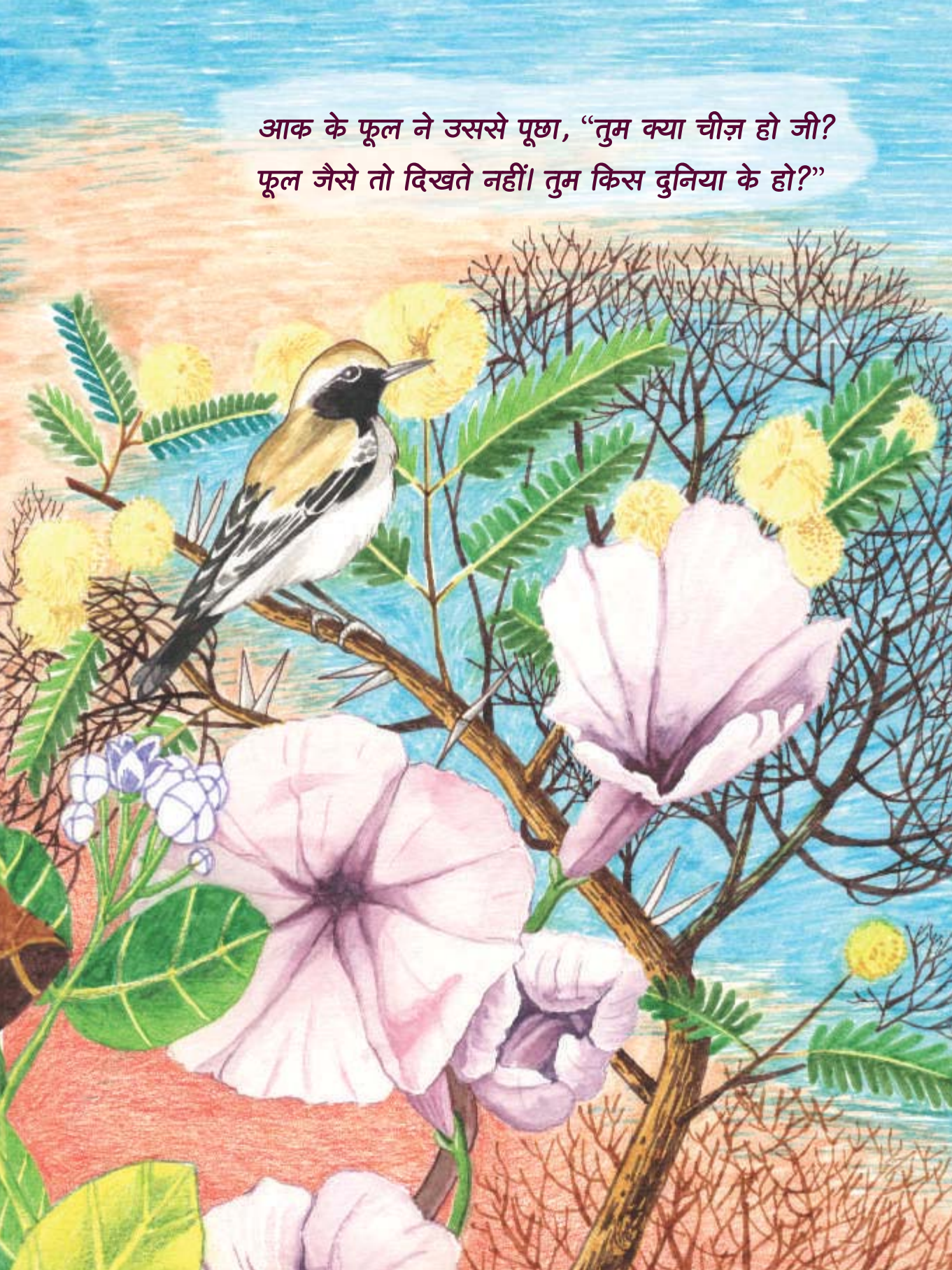

आक के फूल ने उससे पूछा, “तुम क्या चीज़ हो जी?
फूल जैसे तो दिखते नहीं। तुम किस दुनिया के हो?”

ऊँट ज़रा अकबका गया। "किस दुनिया से क्या मतलब है तुम्हारा? मैं तो इसी दुनिया का हूँ।"

"इसी दुनिया के हो तो यह बताओ कि तुम किसके फूल हो?" आक के फूल ने अगला सवाल पूछा।

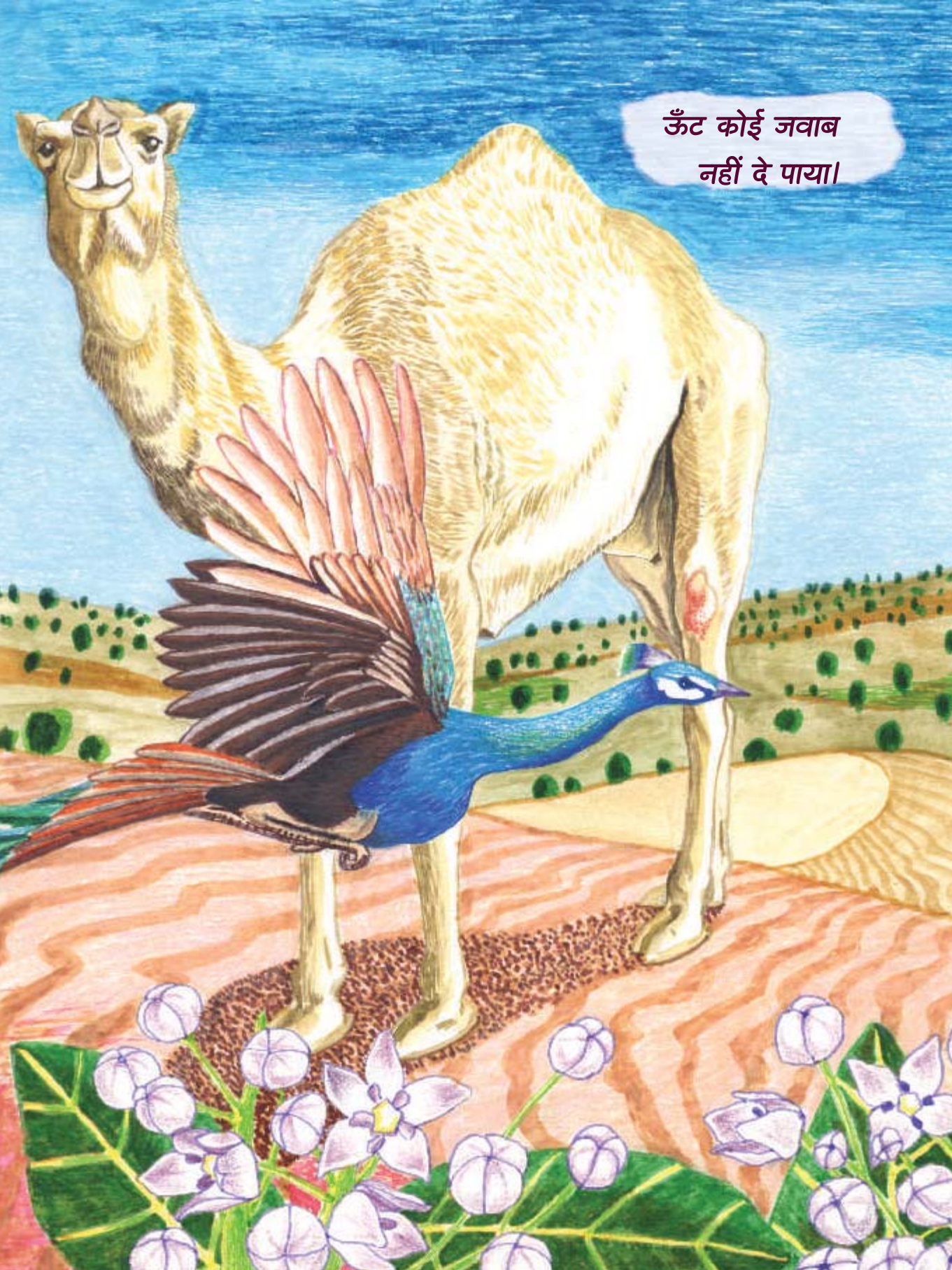
ऊँट कोई जवाब
नहीं दे पाया।

आक के फूल ने उसे प्यार से कहा, "देखो, तुम बहुत ऊँचे हो। तुम अपनी डाली से कहो कि वह तुम्हें थोड़ा नीचे झुका दे ताकि हम आराम से बात कर पाएँ।"

"मेरी कोई डाली-वाली नहीं है," ऊँट ने परेशान होते हुए कहा।

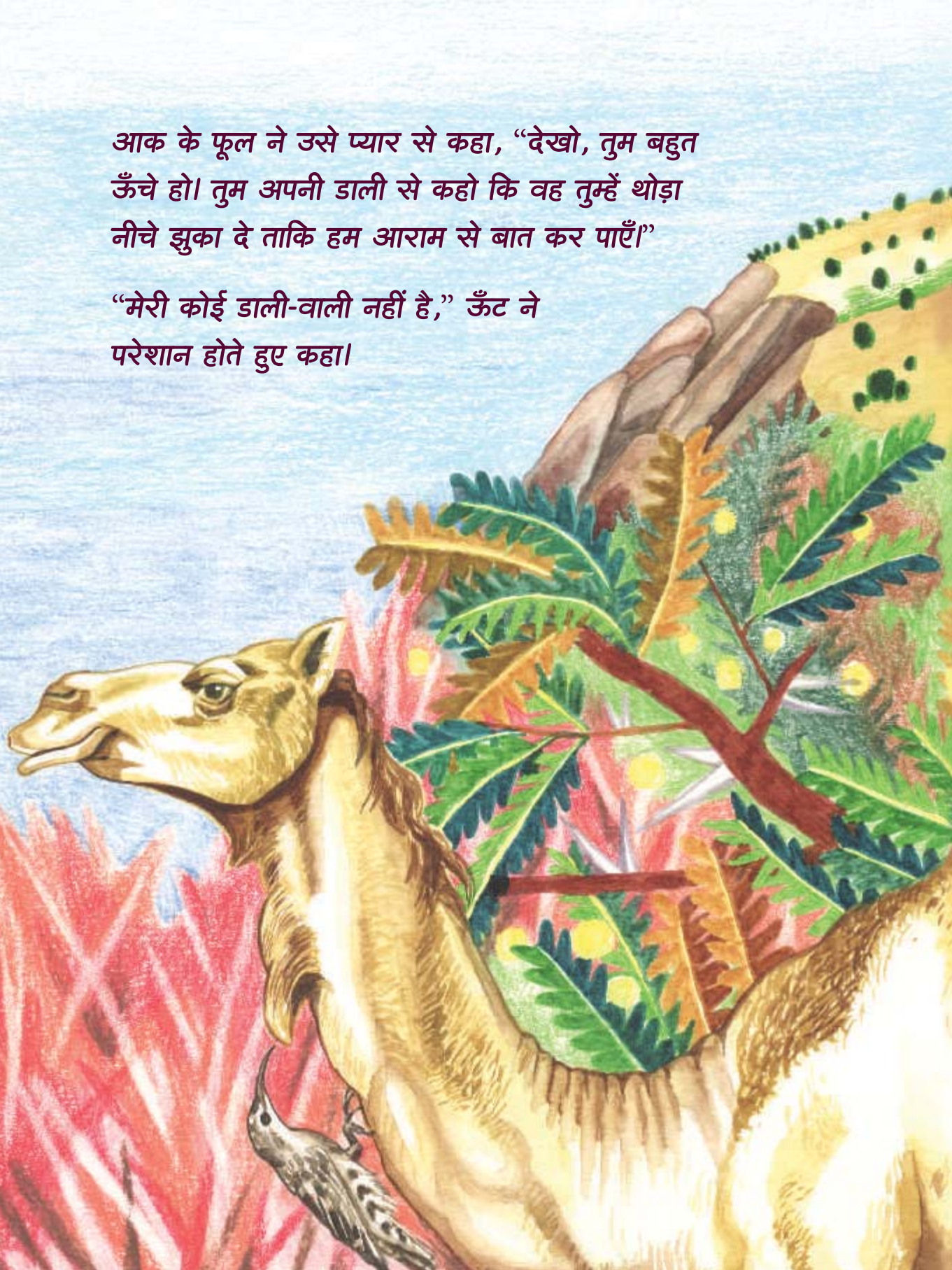

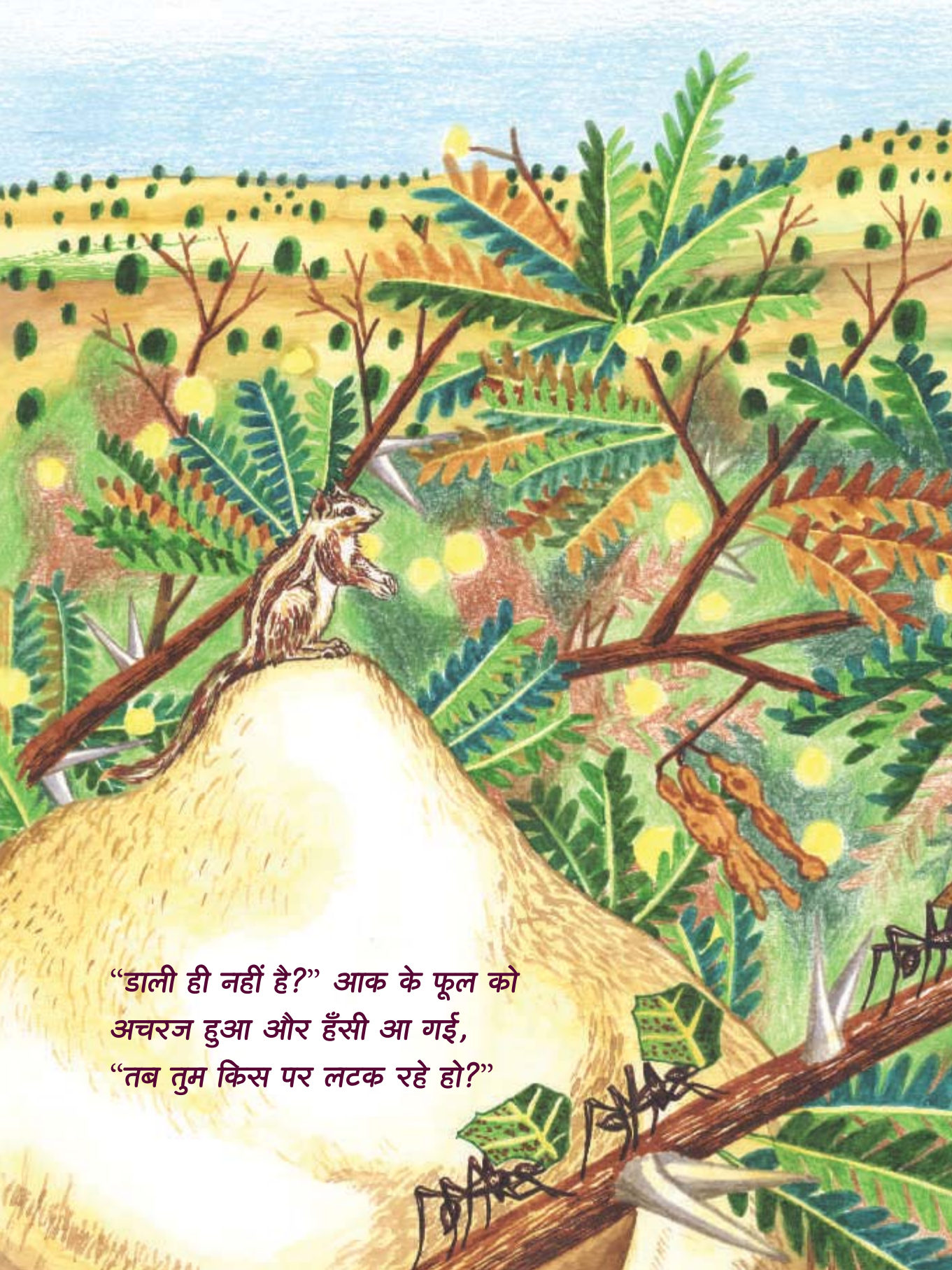

"डाली ही नहीं है?" आक के फूल को
अचरज हुआ और हँसी आ गई,
"तब तुम किस पर लटक रहे हो?"

"मुझे कहीं लटके रहने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं अपने पैरों पर सीधा खड़ा रह सकता हूँ," ऊँट ने कहा।

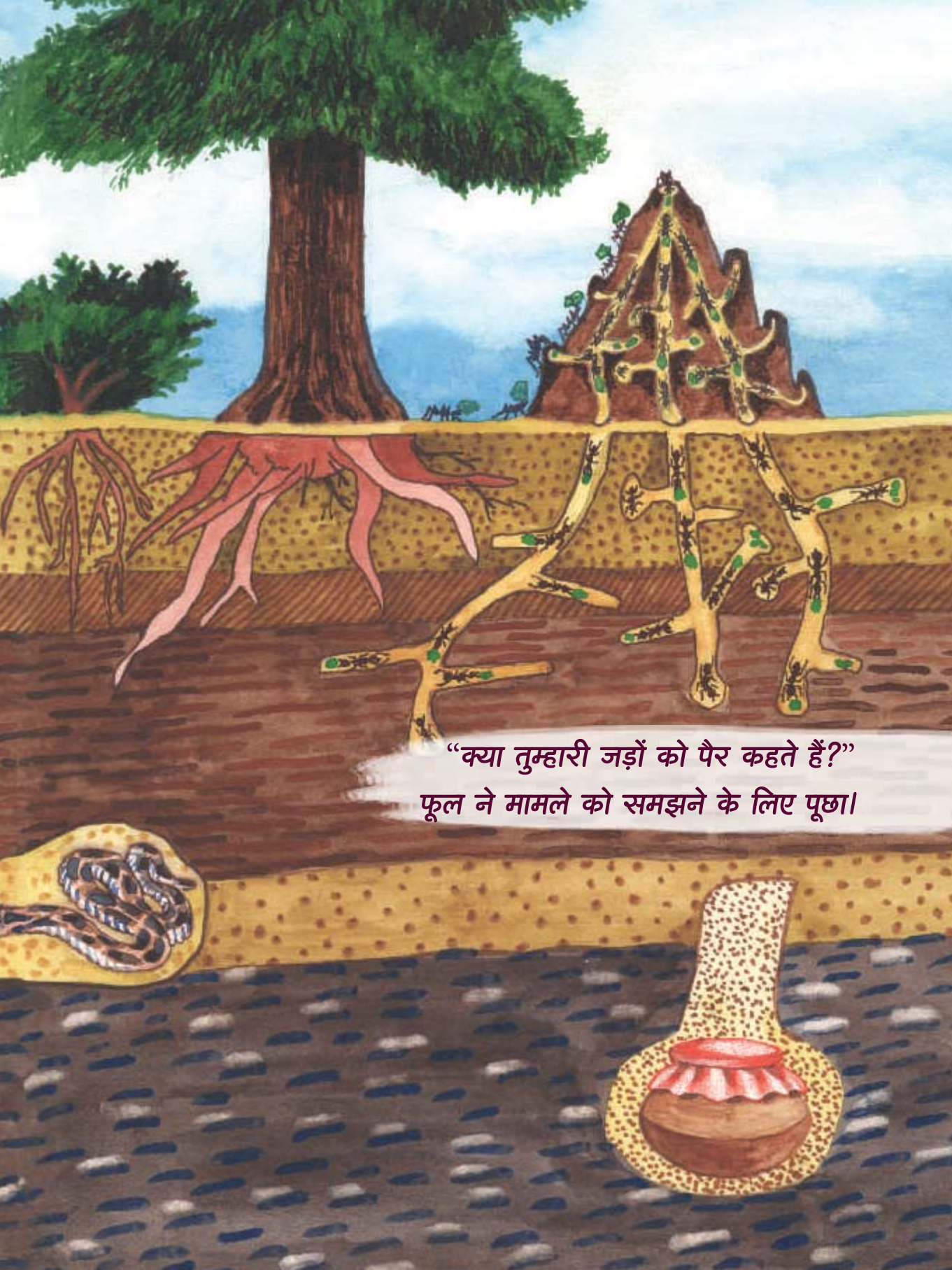

"क्या तुम्हारी जड़ों को पैर कहते हैं?"
फूल ने मामले को समझने के लिए पूछा।

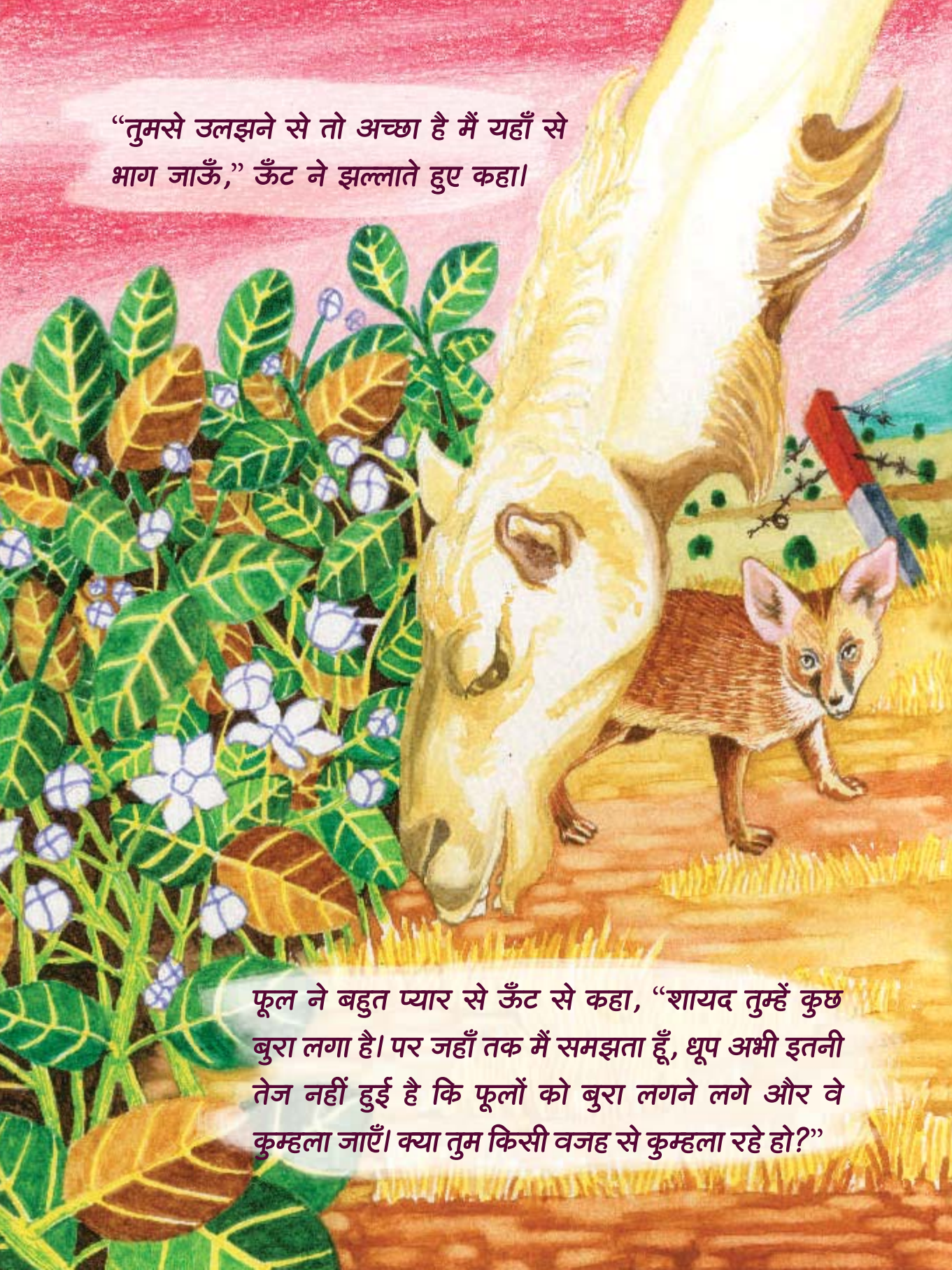

"तुमसे उलझने से तो अच्छा है मैं यहाँ से भाग जाऊँ," ऊँट ने झल्लाते हुए कहा।

फूल ने बहुत प्यार से ऊँट से कहा, "शायद तुम्हें कुछ बुरा लगा है। पर जहाँ तक मैं समझता हूँ, धूप अभी इतनी तेज नहीं हुई है कि फूलों को बुरा लगने लगे और वे कुम्हला जाएँ। क्या तुम किसी वजह से कुम्हला रहे हो?"

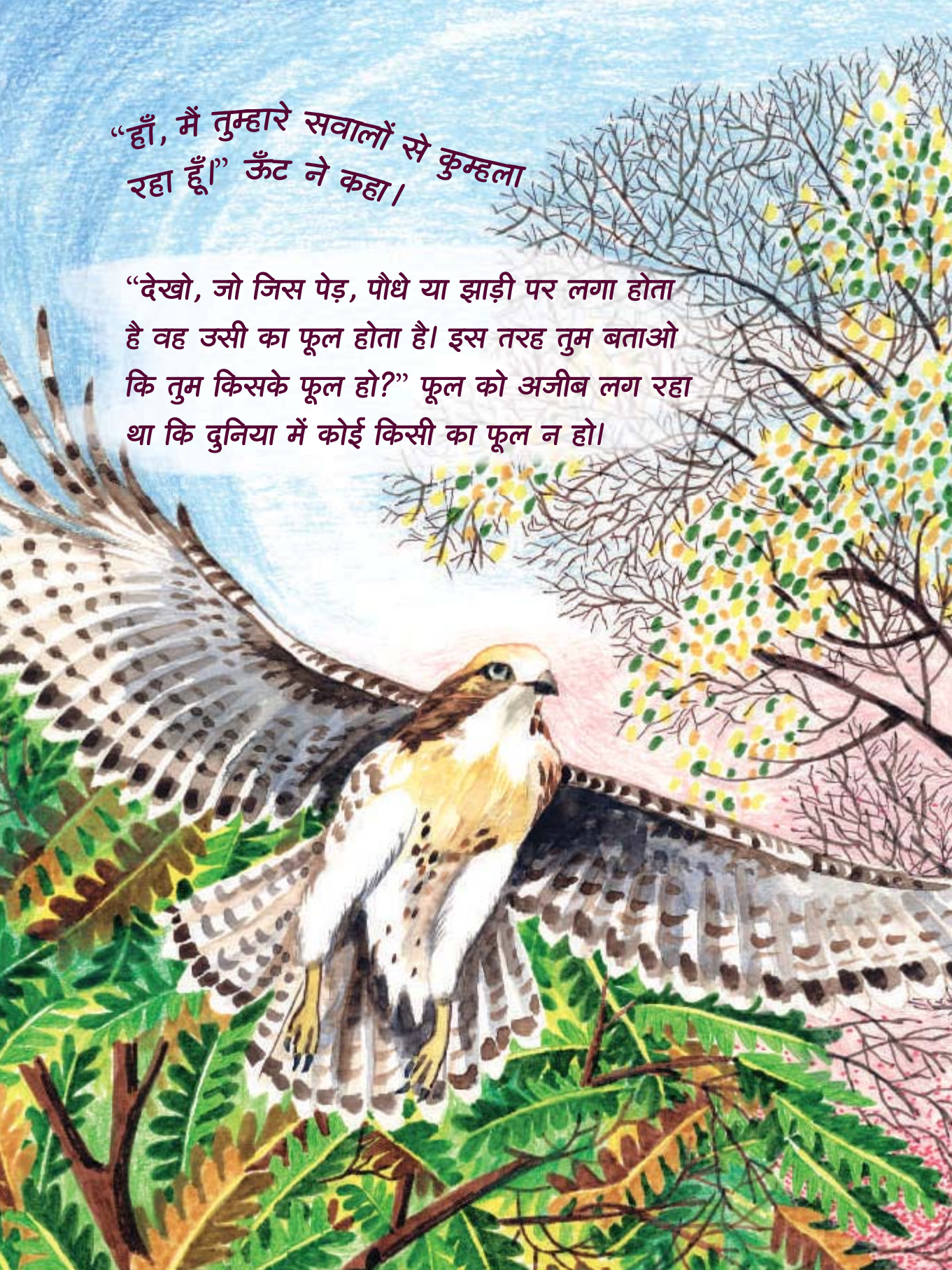

"हाँ, मैं तुम्हारे सवालों से कुम्हला रहा हूँ।" ऊँट ने कहा।

"देखो, जो जिस पेड़, पौधे या झाड़ी पर लगा होता है वह उसी का फूल होता है। इस तरह तुम बताओ कि तुम किसके फूल हो?" फूल को अजीब लग रहा था कि दुनिया में कोई किसी का फूल न हो।

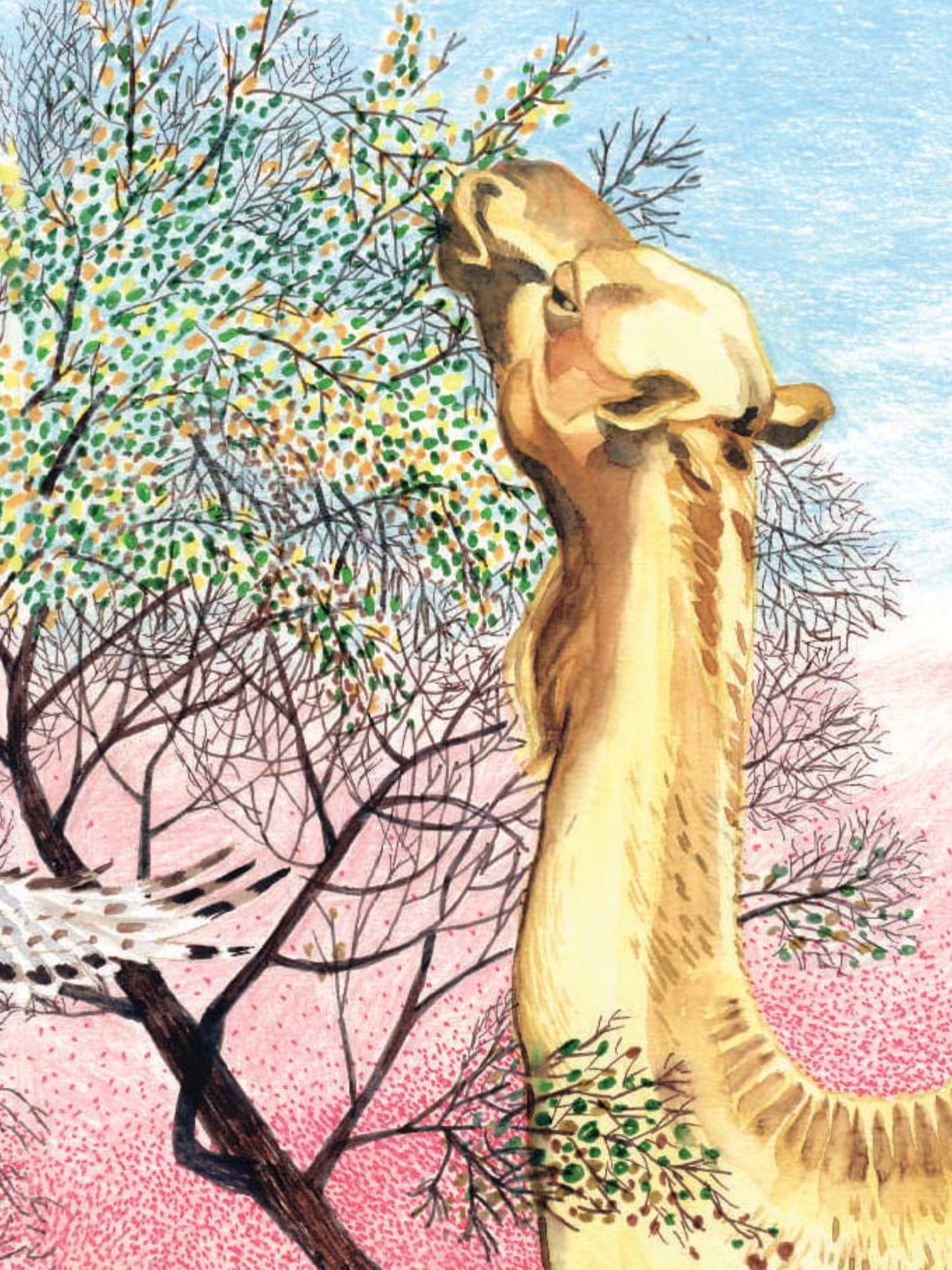

"देखो, मैं एक ऊँट हूँ कोई फूल नहीं," ऊँट ने हाँफते हुए कहा।

फूल ने कोमलता से समझाया, "ऊँट हो? तो तुम ऊँट के फूल हुए। अब देखो कैर है तो कैर के फूल हैं। रोहिड़ा है तो रोहिड़ा के फूल हैं। इस तरह तुम ऊँट हो तो ऊँट के फूल हुए कि नहीं?"

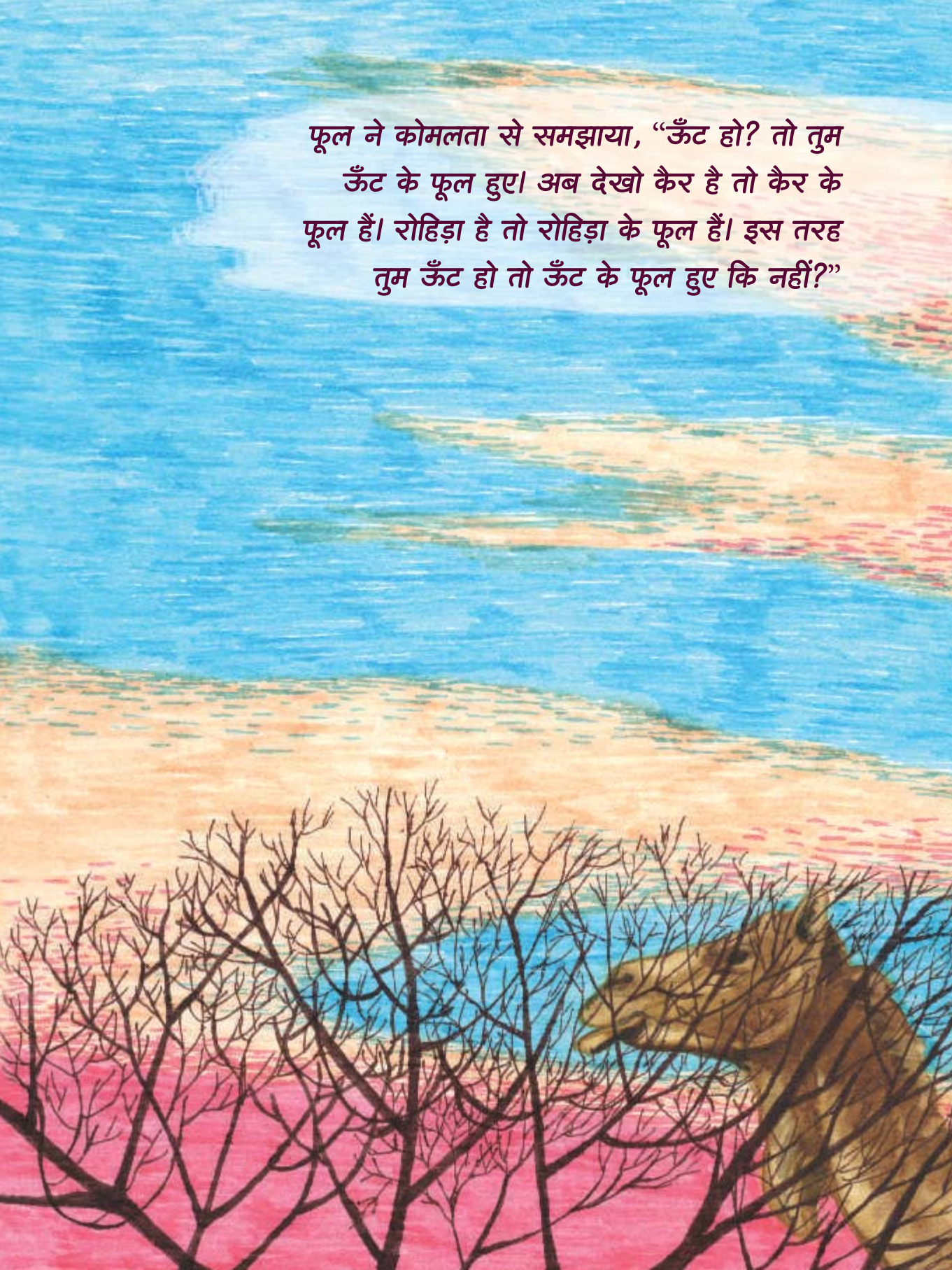

ऊँट को फूल की यह वाली बात सच्ची भी लगी
और अच्छी भी। उसकी इच्छा हुई काफिले में
जाकर दूसरे ऊँटों को भी यह नई जानकारी दे।

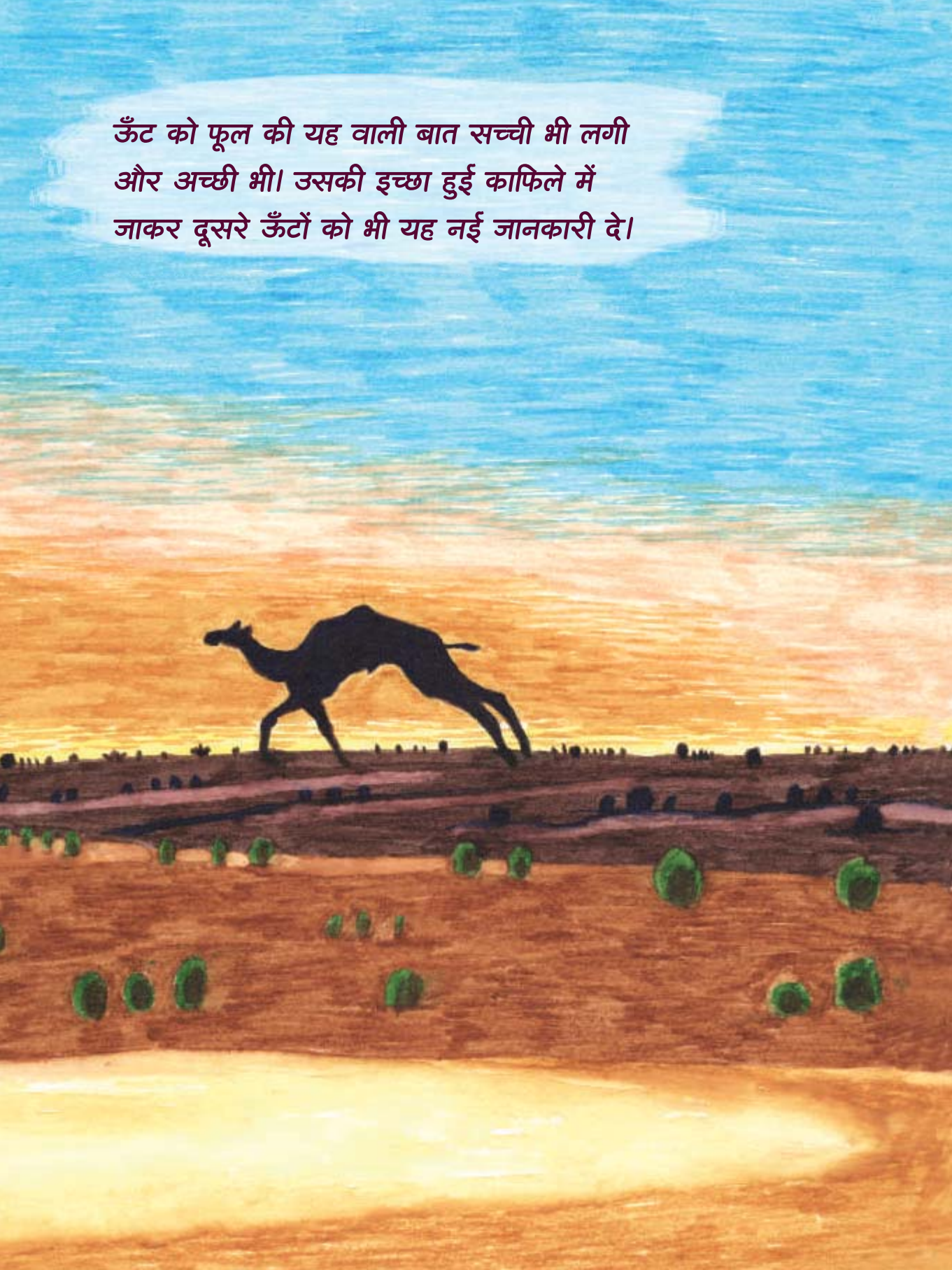

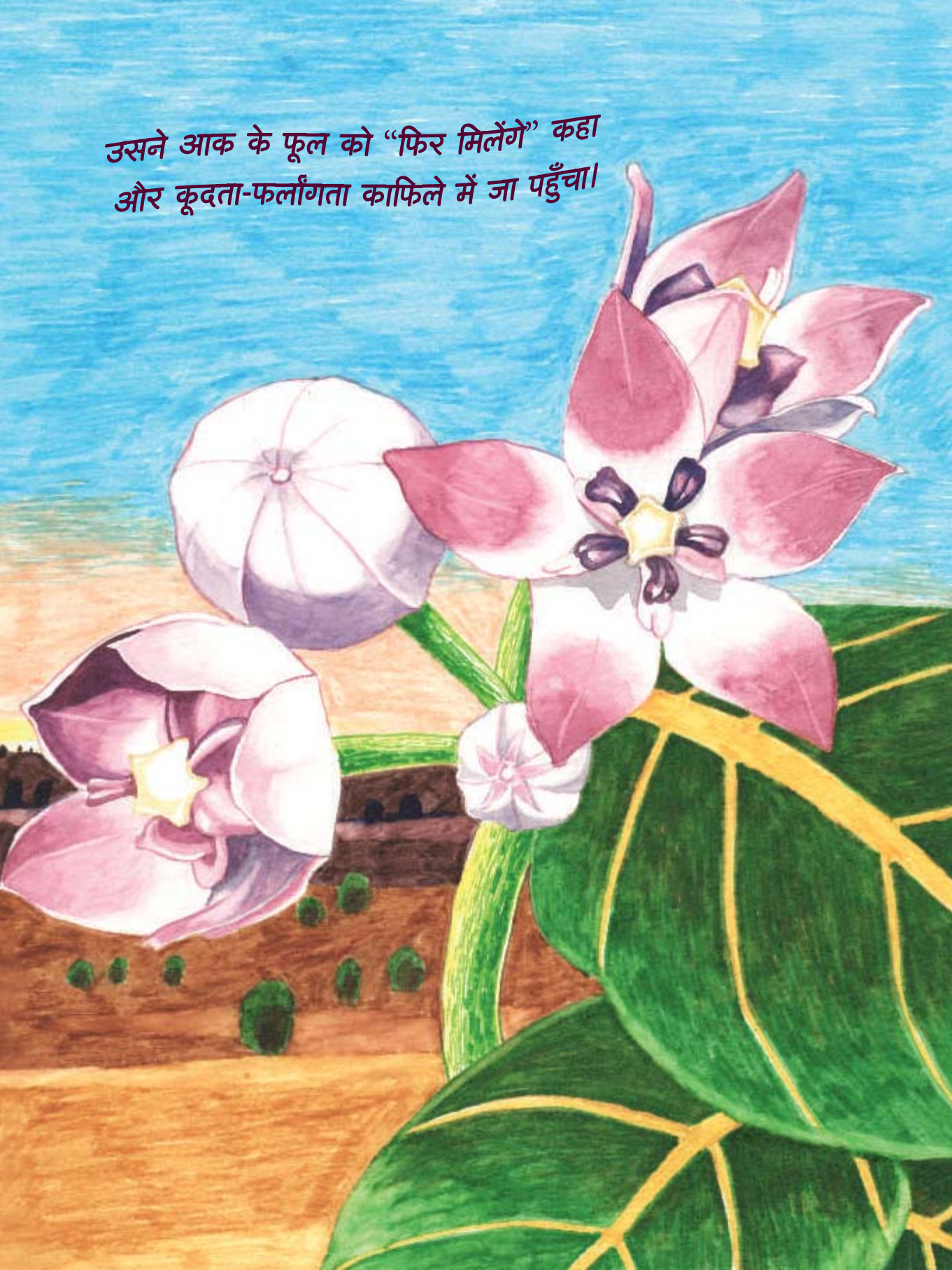

उसने आक के फूल को "फिर मिलेंगे" कहा
और कूदता-फलाँगता काफिले में जा पहुँचा।

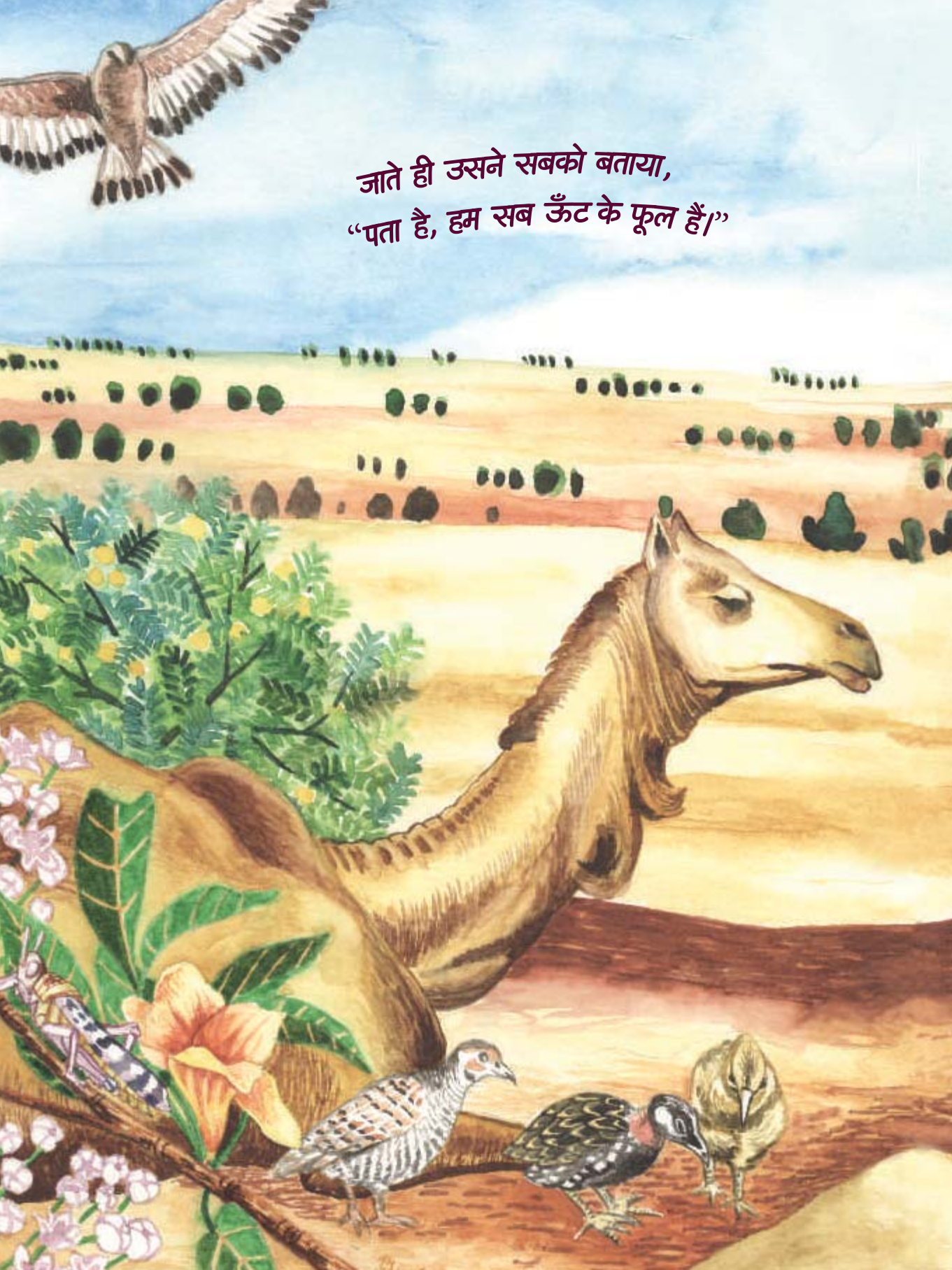

जाते ही उसने सबको बताया,
"पता है, हम सब ऊँट के फूल हैं।"

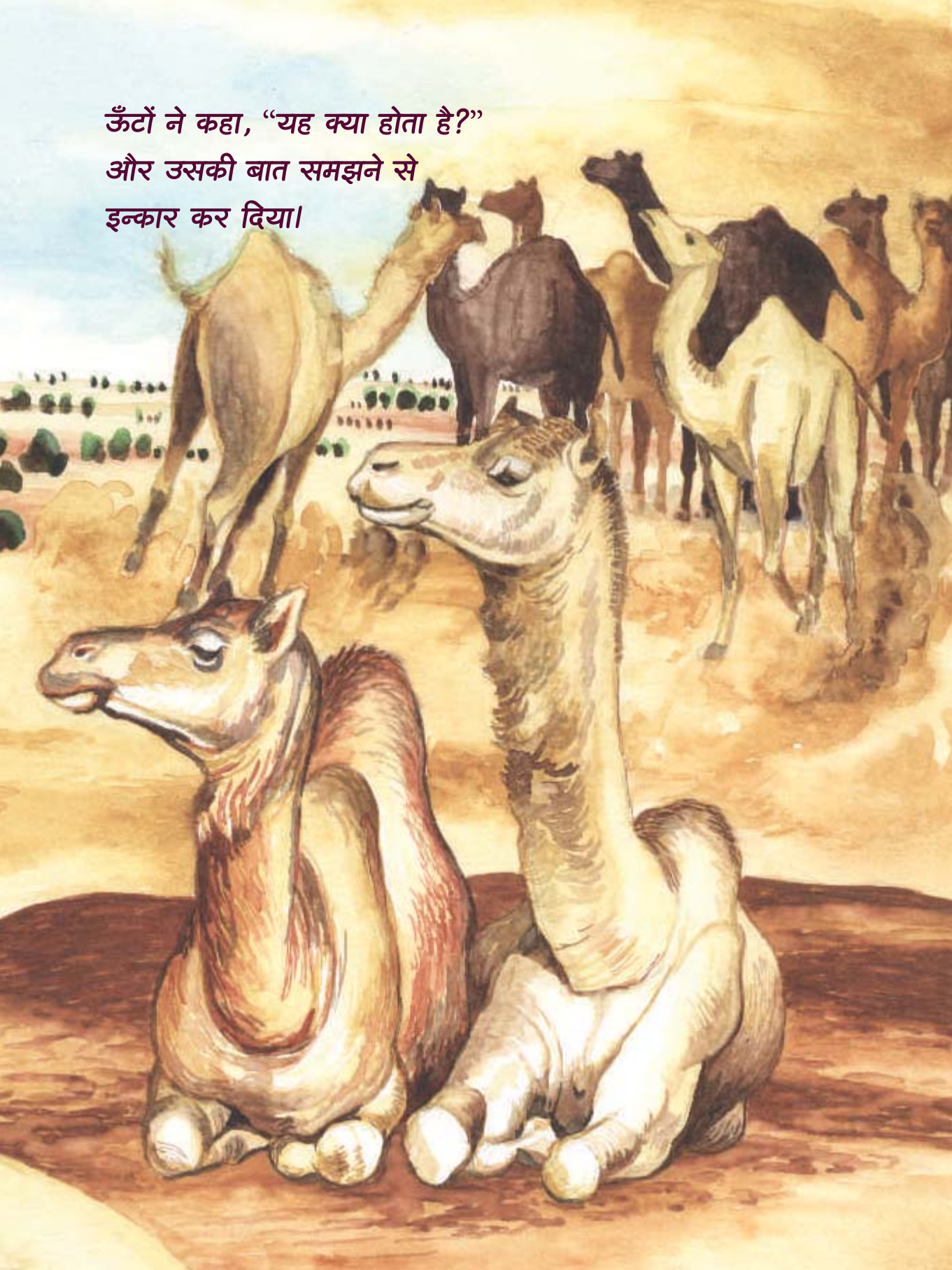

ऊँटों ने कहा, "यह क्या होता है?"
और उसकी बात समझने से
इन्कार कर दिया।

"सफ़दर हाशमी और प्रोफेसर अनिल सद्गोपाल के लिए"

प्रभात

"प्यारे ऊँटों के फूलों और फूलों के ऊँटों
और दिशा, आरुषी, ध्रुव, कुशाग्र के लिए"

लोकेश खोड़के

ऊँट का फूल
Oont ka Phool

कहानी: प्रभात
चित्र: लोकेश खोड़के
डिज़ाइन: कनक शशि

© कहानी: प्रभात
© चित्र: लोकेश खोड़के

जून 2015/ 3000 प्रतियाँ
कागज़: 100 gsm मेपलिथो व 220 gsm पेपरबोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट तथा नवजबाई रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

ISBN: 978-93-81337-64-6
मूल्य: ₹65.00

प्रकाशक: एकलव्य
ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल मप्र - 462016
फोन: +91 755 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आदर्श प्रा लि, भोपाल, फोन: +91 755 255 5442

इस किताब में उपयोग किया गया कागज़ नवीकरणीय बागानों से प्राप्त लकड़ी से बना है।

इस कहानी की प्रेरणा...

पाठक वर्ग के रूप में बच्चों को ध्यान में रखकर लिखी जाने वाली रचनाओं में भी श्रेष्ठ रचनाएँ वे ही ठहरती हैं जिनमें कुछ ऐसा तत्व ज़रूर हो जो किसी भी उम्र के पाठक को विस्मित और आनन्दित कर जाए। जीवन सौंदर्य की झलक दे जाए। बड़ों के लिए है या बच्चों के लिए, यह तो बाद की बात है और कृत्रिम विभाजन है।

हर कहानी की रचना प्रक्रिया और प्रेरणा प्रायः अलग होती है। लिटिल प्रिंस में एक संवाद है, लिटिल प्रिंस फूल से पूछता है, "मनुष्य कहाँ रहते हैं?" फूल कहता है, "मनुष्यों की जड़ें तो होती नहीं, वे हवा के साथ कहीं भी चले जाते हैं। उनका जीवन बड़ा कठिन है।" मैं पढ़कर दंग रह गया। क्या कहन की ऊँचाई है, कैसी रस से छलकती भाषा है और जीवन का कैसा अनुपम सरल बोध। क्या इतना कल्पनाशील भी लिखा जा सकता है।

ऊँट का फूल कहानी को लिखे जाने की प्रेरणा शायद यह संवाद रहा।

प्रभात

ऊँट का फूल के चित्र बनाते हुए...

हम अक्सर पेंटिंग और इलस्ट्रेशन के बीच एक दीवार खड़ी कर देते हैं। एक तरफ तो हमें लगता है कि पेंटिंग किसी कलाकार की मौलिक अभिव्यक्ति होती है जिसका रचना संसार बहुत ही विस्तृत होता है। वहीं दूसरी तरफ हम इलस्ट्रेशन को एक संकुचित दायरे में घेर देते हैं जिसका काम केवल किसी कहानी, कविता या प्रोडक्ट को चित्र भाषा में बयान करना होता है। तो फिर हम मुगल लघु-चित्रों, पर्शियन, पहाड़ी अथवा राजस्थानी चित्रों को क्या संज्ञा देंगे? वो पेंटिंग हैं या इलस्ट्रेशन? अगर वो पेंटिंग हैं तो फिर इलस्ट्रेशन से किस प्रकार भिन्न हैं? और अगर इलस्ट्रेशन हैं तो क्या उनका रचना-आकाश किसी प्रकार से संकुचित है?

एक चित्रकार के नज़रिए से मैं इन प्रश्नों को बहुत महत्वपूर्ण मानता हूँ। *ऊँट का फूल* नामक यह खूबसूरत कहानी जो प्रभात ने लिखी है, उसके लिए चित्र बनाते वक्त मैं लगातार यह कोशिश कर रहा था कि ये चित्र किसी भी पाठक के लिए कहानी को सरलीकृत ढंग से कहने का माध्यम मात्र न बन जाएँ। बल्कि कोशिश यह थी कि कहानी के मूल तत्वों को रखने के साथ-साथ ये चित्र अपने आप में कई और कहानियाँ, कई और जिज्ञासाएँ उत्पन्न कर पाएँ। इस प्रकार लेखन की भाषा और चित्रों की भाषा, इन दोनों का सामंजस्य कुछ इस तरह बने कि पढ़ने या देखने वाले के लिए कई दिशाओं का निर्माण कर पाए।

मैं इस किताब के लिए कनक शशि और शेफाली जैन का तहे-दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ क्योंकि उनकी मदद के बिना यह किताब कभी भी सम्भव नहीं हो सकती थी।

लोकेश खोड़के

परिचय

प्रभातः राजस्थान के रायसना गाँव में जन्म। कविता और कहानी दोनों ही फन में माहिर प्रभात शौकिया चित्रकार भी हैं। देश के प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित। दर्जन भर से अधिक किताबें। 2010 में सृजनात्मक साहित्य पुरस्कार और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार और 2012 में युवा कविता समय सम्मान से नवाज़े गए प्रभात फिलहाल प्राथमिक शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम विकास, शिक्षक प्रशिक्षण, रचनात्मक लेखन और बच्चों की पत्रिका के सम्पादन में व्यस्त हैं।

लोकेश खोड़केः चित्रकार हैं। बड़ौदा के फैकल्टी ऑफ फाइन आर्ट्स से एम एफ ए। एकल चित्र प्रदर्शनी के साथ-साथ देश-विदेश में ग्रुप शो में भी भागीदारी की है। तूलिका प्रकाशन, दिल्ली की चित्रकला पर महत्वपूर्ण किताब *Articulating Resistance: Art & Activism* में उनका काम प्रकाशित हुआ है। अन्वेषी संस्था से प्रकाशित किताब *Mother* के लिए शेफाली जैन के साथ सह-चित्रांकन। एकलव्य द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं *चकमक* और *संदर्भ* के लिए चित्रांकन। इन दिनों एशिया आर्ट आर्काइव, दिल्ली से जुड़े हैं।

ऊँट अपनी दुनिया के बारे में सब जानता था। जब वह मिला फूल से तो फिर दुनिया वही थी पर उसे देखने का नज़रिया कुछ जुदा था।

कितनी मज़ेदार होती है दो अजनबियों की बातचीत और उस बात से निकलने वाली नई सोच, जो कल्पनाशीलता की एक अलग दुनिया में ले जाती है।

मूल्य: ₹65.00

9 789381 337646